International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org December- 2016, Volume-3, Issue-6 Email- editor@ijesrr.org

उत्तर प्रदेश के जनपद कासगंज में कृषि आधारित उद्योगों का विकास

Manoj Kumar
Research Scholar
Sunrise University, Alwar
Rajasthan

Dr. V. K. Tomar
Supervisor
Sunrise University, Alwar
Rajasthan

सार

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही महत्व होता है जितना कि मानव संसाधनों का। वास्तव में मानवीय संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधन एक ही गाड़ी के दो पहियों के समान है। मानवीय संसाधन से तात्पर्य, जनसंख्या, उसकी शिक्षा, कार्य कुशलता, दूरदर्शिता तथा उत्पादकता से होता है। मानवीय संसाधन एक ऐसी पूंजी है जो किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विकास में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।

प्रस्तावना

आज भारत राष्ट्र की जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ रही है उस अनुपात में न तो खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्वि हो रही है और न ही ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापनरा हो रही है। अतः राष्ट्र के सामने चिन्ता का विषय यह है कि यदि इसी गति से यह जनसंख्या बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत राष्ट्र विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र होगा और हम इस कृषि प्रधान देश ककी जनसंख्या की पर्याप्त मात्रा में भोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकेंगे। अतः अब राष्ट्र के सम्मुख एक ही विकल्प है कि वह ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में नई तकनीकों, बीजों, उर्वरकों का प्रयोग करके प्रति हेक्टैयर उत्पादन में वृद्वि करे। बेकार पड़ी बंजर, ऊसर परती व अन्य कृषि योग्य भूमि को कृषि के अन्तर्गत उपयोग में लाये। ग्रमीण अविकसित क्षेत्रों में औद्योगीकरण को प्रोत्साहन दे ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी को कम किया जा सके। आज लोग रोजगार की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहर की ओर आकर्षित हो रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर समाप्त होते नजर आ रहे हैं। शहरों में जनसंख्या का अतिक्रमण हो रहा है। पानी, बिजली और यातायात व प्रदूषण जैसी गम्भीर समस्याओं से शहरी जनसंख्या को सामना करना पड़ रहा है। यदि हम इस समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं तो हमें ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगीकरण द्वारा जनसंख्या के लिए रोजगार के अवसर जुटाने होंगे तभी शहरों की ओर जनसंख्या का पलायन रूक सकेगा।

यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को ध्यान में रखकर सरकार द्वारा समय समय पर समितियाँ गठित की जा रही है। इस दिशा में सर्वप्रथम प्रयास अप्रैल 6 में हुआ जब लघु उद्योग की पहल पर ग्रामीण औद्योगीकरण एवं लघु व मध्यम उद्योगों के द्वारा अविकसित क्षेत्रों के विकास की संभावनायें तलाशने के लिये Committee on Dispersal of Industries गठित की गई। योजना आयोग द्वारा जनवरी, 1964 में गठित पटेल समिति ने उत्तर प्रदेश के अविकसित क्षेत्रों को विकसित करने के लिए सुझाव दिये।

स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत सरकार ने कृषि एवं उद्योगों के विकास के लिए जिस योजना आयोग की स्थापना की थी उसका प्रमुख उद्देश्य कृषि उत्पादों का विपणन में सुधार लाना एवं उद्योगों का विकास करना था। यद्यपि सरकारी प्रयासों से वर्तमान में, कृषि में उत्तम तकनीकों के प्रयोग से विकास हो रहा है। सरकार की औद्योगिक नीति का प्रयोग करके औद्योगिक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में कृषि अपना सक्रिय योगदान दे रही है। किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए हमें अपने प्रयासों की सक्रियता में निरन्तरता बनाये रखनी होगी।

अध्ययन क्षेत्र

कृषि एवं औद्योगिक विकास के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के नवसृजित कासगंज जनपद का चयन किया गया है। जनपद की अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से कृषि पर आधारित है। जनपद की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर ही आधारित है। कृषि के अतिरिक्त कुछ लोग दुग्धपालन, मुर्गी पालन, आलू के चिप्स एवं पापड़ बनाने एवं कृषि सम्बन्धी अन्य उद्योगों में संलग्न है। शहरी क्षेत्रों की स्थापना के लिए भूमि एवंज ल जैसे मूलभूत संसाधनों की प्रचुरता में आवश्यकता है। यहा पशुधन, खनिज एवं सामान्य श्रेणी के मानव संसाधन उचित मात्रा में उपलब्ध है। जनसंध्या की अधिकता के कारण यहा पर्याप्त मात्रा में सस्ते श्रमिक एवं विविध उत्पाद सम्बन्धी साधन उपलब्ध है। साथ ही जनसंख्या

की अधिकता के कारण खपत के लिए बाजार सम्बन्धी प्रबल संभावनायें कृषि फसलों पर आधारित उद्योगों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

कासगंज उत्तर प्रदेश का एक जिला है। 27° 49' N78 डिग्री 39′E पर स्थित है। 27.82°N 78.65° E /27.82; 78.65, यह 177 मीटर (580 फुट) की औसत ऊंचाई है। पवित्र नदियों गंगा और यमुना और alluvium मिट्टी इसे जिले की भूमि को सबसे उपजाऊ क्षेत्रों में से एक बनाती है।यह के गाँव जनसंख्या मुख्यतः कृषि और संबंधित आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर करता है शहर के आसपास के गांवों के रूप में बस्तियों की बड़ी संख्या हे जो शहर पर निर्भर है। शहर एक प्रमुख विशेषता है भौगोलिक काली नदी के आकार में मिल गया है। शहर एक प्रमुख विशेषता है भौगोलिक काली नदी के आकार में मिल गया है। नदी में दून घाटी का स्रोत है और पवित्र नदी यमुना नदी के साथ जो बाद में मर्ज करता है गाजियाबाद में हिन्डन नदी के साथ विलीन हो जाती है। काली नदी भी दो नहरों जो विशेष रूप से इस प्रयोजन के लिए किए गए दो पुलों के माध्यम से नदी में मिला है। आधुनिक सिविल वास्तु आश्चर्य जो गवाह और इंजीनियरिंग के इस टुकड़े में चमत्कार करने के लिए कुछ जिज्ञासु onlookers से और शहर के चारों ओर आकर्षित करती है की तरह है। अगर समुचित सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं, इस जगह एक अच्छा पर्यटन क्षेत्र के लगभग स्थल के रूप में विकसित होने की क्षमता है।

संरचनाः– संरचना, उच्चावच एवं जल प्रवाह

एडवर्ड स्वीस जो आस्ट्रीयन भू–गर्भ वेला है, ने सुझाया है कि हिमालय पर्वत श्रेणी के निर्माण के समय जब निर्माणकारी भू–स्तरीय लहरें, दक्षिणी की ओर बढ़ी तो स्थिर पैनिनसुला से टकरा कर यह क्षेत्र अभिनति के रूप में (गहरा खड़) बन गया। कालान्तर में हिमालय से निकलने वाली नदियाँ इसी खड़ में गिरने लगीं तथा अपने साथ लाये गये मलवे को इसमें जमा करने लगी। यह कार्य प्लास्टोसीन युग से शुरू होकर आज तक चल रहा है। नदियों ने धीरे–धीरे इस खड को मलवे से भर दिया तथा पूर्व की ओर बढ़ते हुए बंगाल की खाड़ी तक का सफर तय किया। दक्षिण की ओर स्थित मजबूत दक्षिणी पठार ने उन्हें अपनी ओर नहीं बढ़ने दिया। अतः विवश होकर इन्हें पूर्व का ही रास्ता लेना पड़ा। एस०जी० बुराड ने भू–गर्गीय आंकड़ों के आधार जो अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, वह ज्योसिन अलाइन विचार धारा के पूर्णतया विपरीत है। उन्होंने बताया है कि मैदान एक रिफ्ट घाटी का स्वरूप है, जिसके दोनों किनारों पर समानान्तर भ्रंशन की क्रिया हुई जो अधिकतम 20 मील गहरे तक पहुँची। कालान्तर में हिमालयन नदियों ने अपने मलवे से इसे भर दिया। एस०जी० बुर्राड के दृष्टिकोण के समर्थन में कुछ भू–गर्भिक तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं। भू–गर्भिक एवं भू–संरचना के दृष्टिकोण से कोई निश्चितता नहीं है।

इस क्षेत्र के सम्बन्ध में एक तीसरा दृष्टिकोण सामने आया है जो आधुनिकतम एवं तर्कसंगत है। इसमें बताया गया है कि सम्पूर्ण पृथ्वी के मध्य में एक सागर स्थित था, जिसका नाम टैथिज सागर था। इसके उत्तरी भू–खण्ड का नाम अंगारा लैण्डएवं दक्षिणी भू–खण्ड का नाम गोंठनाना लैण्ड था। दोनों भू–खण्डों भी नदियां हैं। ये न सागर में अपना–अपना अवसाद जमा करती थीं। टैभिज सागर के तल पर अवसाद का तनाव पैदा हुआ। परिणाम स्वरूप अंगारा लैण्ड दक्षिण की ओर खिसका। गोड़वाना लैण्ड मजबूत आाग्नेय शैलों द्वारा निर्मित था परिणामतः टैभिज के तल पर जमा तल पर भिचाव ने आई तथा गलन प्रक्रिया पैदा हुई। बलन के कारण नवीन बर्लिन पर्वतों का निर्माण हुआ। भारत में हिमालय पर्वत का निर्माण इसी प्रक्रिया द्वारा हुआ। नलन से अयनति एवं अमिनति बनी। इन्डोगैजेटिक प्लेन एक ओमनति जो हिमालय एवं प्राय द्वीपीय भारत में मध्य में बनी, उसी का स्वरूप ही कालान्तर में हिमालय से निकलने वाली सिन्धु–गंगा एवं उसकी सहायक नदियां इस अभिनति में तल पर जमा करती रहीं। जो आज गंगा–सिंध के मैदान के रूप में दृष्टिगोचर होता है। मैदान में जमा तलक्षर की मोटाई (गहराई) का पता लगाने हेतु सतत् प्रयास होते रहे हैं। इसके लिए जगह–जगह बोर डाल दिये गये जिससे पता चला कि मैदान के उत्तरी भाग में तलपट का जमाव 4444 से 5925 मीटर तक है एवं इसके धरातल का ढाल दक्षिण की ओर है। ई० ए० ग्लेनी ने गुरूत्वाकर्षण के आधार पर मैदान में विभिन्न स्थानों पर परीक्षण किया एवं गणना करने के बाद गहराई का पता लगाया। उनके अनुसार तलक्षर की गहराई 1925.9 मीटर है। लेकिन ग्लेनी का मत भू–गर्भिक तथ्यों पर अघटित नहीं है। इसलिए इसे उचित नहीं ठहराया जा सकता हो सकता है कि तलक्षर की गहराई और अधिक हो।

धरातल (उच्चावच)

कासगंज जनपद की भूमि का ढ़ाल मन्द एवं उत्तर से दक्षिण तथा दक्षिण–पूर्व दिशा को है। यह मैदानी भाग नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी के जमाव से बना है। इसका ढाल लगभग 2 फिट प्रति मील एवं सर्वत्र समान है।

सम्पूर्ण जनपद एक उत्तम कृषिधर क्षेत्र है। केवल नदी की घाटियों या उच्च भूमि के भूड़ क्षेत्र को छोड़कर, शेष उपजाऊ भूमि है। इस जनपद की भूमि अति उत्तम उर्वरा शक्ति वाली है। मैदान में उच्च भू–भाग की अपेक्षा उन नदियों की घाटियां जो नीचे तल पर पहुँच गई हैं। उनकी चौड़ाई भी विभिन्नता विशेष दृश्य उत्पन्न करती है। जबकि इनके बाढ क्षेत्र की सीमा कम है। इनकी घाटियों में ढालू रेत के तह हैं एवं घाटी में कटान की प्रक्रिया अधिक होती है। गंगा नदी की घाटी चौड़ी है तथा एक निश्चित दूरी पर बांगर भूमि शुरू हो जाती है। इसके किनारे पर क्षय क्रिया छोटी नदियों की अपेक्षा कम है।

भू–गर्भिक खनिज (रेह)

सम्पूर्ण मैदान में गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा तलछट जमा करने से इस मैदान का निर्माण हुआ है। इस मैदान में खनिजों की कमी है। केवल रेह नाम से एक खनिज मिलता है। जो सोडियम, कारबोनेट, सोडियम–क्लोराइड़ और सोडियम सल्फेट का मिश्रण है। यह कैल्शियम और मैगनेशियम साल्ट से प्राप्त होती है। यहाँ चूना युक्त कंकर (गांठ) भी मिलते हैं, जिन्हें भट्ठी में जलाकर एवं पीसकर बनाया गया चूना, पहले मकान निर्माण में काम आता था। यहाँ से प्रति वर्ष लगभग 5296 टन रेह की आपूर्ति होती है।

जल–प्रवाह

मैदान के मन्द ढाल का प्रभाव यहाँ भी जल प्रवाह प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वास्तव में मैदान के धरातल की जल प्रवाह प्रणाली का अध्ययन दो शीर्षकों के अन्तर्गत करना उचित होगा। प्रथम नदिया और दूसरा झीलें। इस क्षेत्र की मुख्य नदियां गंगा, यमुना ऐसी नदियां हैं जिन पर उद्‌गम हिमालय की बर्फीली चोटियों से हुआ है, इसलिए इन नदियों में वर्षभर पर्याप्त जल, बर्फ पिंघलने से प्राप्त होता रहता है। यानि ये दोनों सदाबहारी नदियां हैं। हिन्डन नदी का उदगम शिवालिक श्रेणी से है तथा शेष नदियों का उदगम झीलों से हुआ है। छोटी जल धाराओं के रूप में प्रवाहित होने वाली नदियां, मौसमी नदियां हैं। वे ग्रीष्म काल में सूख जाती हैं। परन्तु वर्षा ऋतु में भयंकर रूप धारण कर लेती है। इन मौसमी नदियों का जल ग्रीष्म ऋतु में शून्य से उठकर वर्षा ऋतु में हजारों क्यूबिक फीट प्रति सेकिंड हो जाता है। इस प्रकार अचानक जल का बढ़ना धन–जन की अपार हानि करता है।

गंगा नदीः– इस नदी का जनपद में प्रवेश उत्तर–पूर्व दिशा में होता है। सामान्य रूप से यहां प्रवाह दिशा उत्तर से दक्षिण प्रतीत होती है। गंगा की घाटी रेतीली है, जिसके नीचे जहाँ–तहाँ कंठों की जमाव भी मिलता है। नदी में जल की मात्रा मौसम के अनुसार घटती, बढ़ती रहती है। ग्रीष्म काल में जलधारा की चौड़ाई अधिक से अधिक एक फर्लांग के लगभग होती है। जो वर्षा ऋतु में बढ़कर लगभग एक मील हो जाती है। यानि ग्रीष्मकाल की अपेक्षा वर्षा ऋतु में लगभग आठ गुणा जल में वृद्धि हो जाती है। इसके दोनों तटों में मन्द क्षय की क्रिया होती है। मानसून की ऋतु में इस में बाढ़ आ जाती है, जो दोनों किनारे तोड़कर दूर तक जल भर जाता है। बाढ़ उतरने पर बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में उपजाऊ काँप मिट्टी की परत बिछ जाती है। जो कृषि के लिए वरदान सिद्ध होती है। नहर एवं रेलवे निर्माण से पूर्व गंगा में जल परिवहन के रूप में नावें चतली थी। परन्तु वर्तमान में इसका जल नहरों द्वारा सिंचाई में प्रयोग किया जाता है।

यमुनाः– हिन्दु धर्म के अनुसार यमुना को सूर्य देव की पुत्री माना जाता है। नदी का पानी स्थानीय कृषि में ही प्रयोग किया जाता है। नदी की चौड़ाई ग्रीष्म ऋतु में कम हो जाती है, परन्तु वर्षा ऋतु में इसकी चौड़ाई लगभग डेढ़ किमी० होती है। उपरोक्त के अतिरिक्त कुल अन्य जल प्रवाह के साधन भी जनपद में विद्यमान हैं।

जलवायु

जनपद कासगंज सम–शीतोष्णा कटिबंध की पेटी में माना जाता है। यहां की जलवायु मानसूनी है। जहां वर्ष में तीन मुख्य ऋतुएं होती है। शीत ऋतु में यानि नवम्बर के मध्य से मई तक महाद्वीप बनने चलती है। जो शुष्क होती है तथा जून से अक्टूबर तक यह दक्षिणी–पश्चिमी एवं उत्तरी–पूर्वी समुद्री पवनों के (जिन्हें मानसून कहते हैं, प्रभाव में रहता है।) उपरोक्त भवन संचलन के साथ–साथ यहां नवम्बर से फरवरी तक शीत ऋतु, मार्च से जून तक ग्रीष्म ऋतु एवं जौलाई से अक्टूबर तक वर्षा ऋतु निश्चित की गई है।

कुछ विद्वानों ने जलवायु को ऋतुओं में विभिन्न के अतिरिक्त दो भागों में विभाजित किया है (1) शुष्क मानसून, (2) वर–मानसून। यह विभाजन पवनों की दिशा के आधार पर किया गया है। शुष्क मानसून नवम्बर से मध्य जून तक माना गया है। इसके उत्तरी–पूर्वी स्थलीय पवने प्रवाहित होती हैं, जो शुष्क होती हैं। इन दिनों का ताप अपनी चरम सीमा तक पहुंचा जाता है। आकाश साफ रहता है एवं सापेक्ष आद्रता कम रहती है। तर या वैट मानसून का समय जून से अक्टूबर के मध्य अथवा अन्त तक माना जाता है, इस मौसम में दक्षिणी–पूर्वी पवने चलती हैं। जो समुद्र की ओर से

आने के कारण आद्रता युक्त होती है। इसे वर्षा ऋतु भी कहते हैं तथा सम्पूर्ण वृद्धि का लगभग 95 प्रतिशत भाग से अधिक वृष्टि इन्हीं दोनों में होती है। इन दिनों आकाश में बादल, भारी वर्षा एवं उच्च सापेक्ष आर्दता रहती है।

शुष्क मानसून समय को भी दो भागों में विभाजित किया गया है। (अ) शरद ऋतु (ब) ग्रीष्म ऋतु। शरद ऋतु नवम्बर से फरवरी तक एवं ग्रीष्म ऋतु मार्च से जून तक मानी गई है। लेकिन मानसून की विशेषताओं के आधार पर इण्डियन मेट्रोलोजिकल विभाग ने पूरे वर्ष को चार ऋतुओ में विभाजित किया है। (अ) शीत ऋतु दिसम्बर से फरवरी तक (ब) ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक) (स) वर्षा ऋतु (मध्य जून से सितम्बर तक) (द) लौटते मानसून (अक्टूबर से नवम्बर तक) कासगंज जनपद का साधारण विभाजन निम्नवत् है।

(1) शरद ऋतु का समय (नवम्बर से फरवरी तक)
(2) ग्रीष्म ऋतु का समय (मार्च से मध्य जून तक)
(3) वर्षा ऋतु का समय (मध्य जून से अक्टूबर तक)

सारणी सं० 1
तापमान एवं सापेक्ष आद्रता
(2015–16 तक उपलब्ध आँकड़ों पर आधारित)

महीने	प्रतिदिन अधिकतम औसत (0°C)	प्रतिदिनि न्यूनतम औसत (0°C)	तापमान मासिक औसत (0°C)	सापेक्ष आद्रता (O/O) भारतीय प्रमाणिक समय 8. 30 प्रातः
जनवरी	20.8	8.2	14.5	82
फरवरी	23.5	9.8	16.6	68
मार्च	28.8	15.0	21.9	55
अप्रैल	36.3	20.3	28.3	40
मई	40.6	25.3	32.9	38
जून	39.8	28.5	34.1	56
जौलाई	35.2	26.9	31.5	78
अगस्त	32.6	25.5	29.2	83
सितम्बर	33.8	24.6	29.2	79
अक्टूबर	32.9	18.3	25.6	68
नवम्बर	28.9	10.9	20.0	63
दिसम्बर	23.9	8.0	16.0	75
वार्षिक	31.7	18.3	25.0	68

इस क्षेत्र में शरद ऋतु में बोई जाने वाली फसलें रबी की फसल कहलाती हैं, जिसमें सिंचाई की आवश्यकता कम होती है, इसमें खाद्यान्न–गेंहू, चना, मटर, जौं, मसूर आदि अधिक उत्पन्न किये जाते हैं। वर्षा ऋतु में बोई जाने वाली फसलें खरीफ की फसलें कहलाती है, इसमें मक्का, बाजरा, ज्वार, उर्द, मूंग, अरहर आदि हैं। गन्ना विशेष रूप से ग्रीष्म ऋतु में बोया जाता है एवं शरद ऋतु में काटा जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सिंचाई के द्वारा सब्जियां उत्पन्न की जाती हैं।

शोध का महत्व

भारत वर्ष एक कृषि प्रधान देश है। इस देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है। ग्रामीण क्षेत्रों में 90 प्रतिशत जनसंख्या कृषि से ही अपनी जीविका चलाती है। अधिकांश मनुष्य जिनके नाम पर कृषि नहीं है, वे भी कृषक कर्मचारी के रूप में कृषि पर आधारित है। आधुनिक उद्योगों के लिए कच्चा माल भी कृषि उपलब्ध कराती है। राष्ट्र की आय का 50 प्रतिशत भाग भी इसी कृषि से प्राप्त होता है। देश के आर्थिक विकास में कृषि का योगदान अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दूसरी ओर इसके माध्यम से पशुधनों को संरक्षण प्राप्त होता है, क्योंकि हरे तथा सूखे चारे के रूप में उन्नत कृषि क्षेत्र की आपूर्ति सदैव महत्वपूर्ण रही है।

कृषि की दूसरी विशेषता यह भी है कि यह राष्ट्र के लगभग प्रतिशत श्रमिकों को रोजगार प्रदान कराती है। इस प्रकार राष्ट्र के आन्तरिक एवं वाहय दोनों प्रकार के विकास में कृषि का योगदान रहा है। कासगंज जनपद में पिछड़ी जाति का बाहुल्य होने के कारण आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रयोग कम मात्रा में किया जा रहा है। इसका प्रभाव कृषि उत्पादन एवं पूंजी निर्माण पर भी पड़ा है। अतः इस शोध कार्य के अन्तर्गत आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रयोग से कृषि उत्पादन एवं पूंजी निर्माण पर पड़ने वाले प्रभावों को भी स्पष्ट किया जायेगा तथा कृषि आधारित उद्योगों को विकसित करने के लिए पूर्व प्रयास किये जायेंगे।

उपकल्पना

जनपद कासगंज में कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों का अध्ययन मूलतः विवरणात्मक होगा, लेकिन निदानात्मक पक्ष पर भी प्रकाश डाला जायेगा। अध्ययन को उचित दिशा निर्देश देने हेतु निम्न उपकल्पनायें निर्मित की गयी है। जिनका परीक्षण करने का प्रयास शोधार्थी करेगा।

- कासगंज जनपद का अधिकांश भाग आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है, नगरीय क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र अधिक अविकसित है।
- अविकसित क्षेत्रों के कृषक एवं कृषि श्रमिक निर्धन एवं शोषित है।
- इनकी आर्थिक दशा सुधारने, सामूहिक क्रय शक्ति विकसित करने एवं वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सहकारी आन्दोलनों को प्रारम्भ किया गया है।
- जनसंख्या की आय के श्रोत कम हैं परिमाणतः ऋण को पूर्णतः अदा करने में असमर्थ है।
- ग्रामीण क्षेत्र विकसित नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र जो यातायात की सुविधा से वंचित है, बहुत पिछड़े हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योगों का विकास भी नहीं हुआ है। अतः इन उद्योगों के विकास हेतु पूर्ण प्रयास किये जायेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- खेत–खलिहान, दिसम्बर– 2004, दैनिक जागरण, पृ01, डा0 जे0ए0 मिश्र एवं डा0 वी0पी0 सिंह राष्ट्रीय खर–पतवार विज्ञान अनुसंधान केन्द्र मध्य प्रदेश।
- मिश्र जे0पी0 भारतीय अर्थव्यवस्था, मिश्रा ट्रेडिंग कारपोरेशन, वाराणसी–2003
- सांख्यिकी सारांश उत्तर प्रदेश, अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान, उत्तर प्रदेश, 1986, 1990, 1995, 2000, 2003 एवं 2011
- डा0 मिश्र शिव गोपाल भारतीय कृषि का विकास, विज्ञान परिषद, प्रयाग।
- उत्तर प्रदेश की आर्थिक समीक्षा अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उत्तर प्रदेश– 2010–11
- गुप्ता प्राची (2013) पूर्वी तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कृषि विकास का तुलनात्मक अध्ययन, पी0एच0डी0 थिसीस, वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
- Eleventh five year and annual plan 200712, Vol-I, Government of India. Uttar Pradesh 2012 based on the fact of 2009-10
- Development report of Uttar Pradesh Vol-II, 2007, Planning Commission Government of India.
- Draft six five year plan Vol.II, Uttar Pradesh (Planning Commission Uttar Pradesh)
- Nag, D.S. Problems of under developed Economies, Laxmi Narayan Agrawal, Educational Publishers, Agra, 1962.
- Rai Chaudhary, S.P. Soils of India, National book trust New Delhi, 1962.
- Sharma, J.P. Agriculture in developing Economies, Pratisha Publications, 1986